

इन्टरव्यू-१०

प्र: आपका नाम क्या है ?

ज: मेरा नाम सलीम है।

प्र: आप किराये पर करघा लेकर बीनते हैं ?

ज: हां।

प्र: तो कितना किराया देना पड़ता है करघे का ?

ज: ढाई सौ रुपया महीना।

प्र: महीने में कमाई कितनी होती होगी ?

ज: पन्द्रह सौ रुपया। ढाई सौ रुपया करघे का और ढाई सौ रुपया जिस कमरे में रहते हैं उसका देना पड़ता है।

प्र: घर में कौन-कौन हैं ?

ज: हम हैं, हमारी बीवी व दो बच्चे हैं।

प्र: भाई लोग भी हैं ?

ज: वो सब अलग रहते हैं हमारे वालिद मदनपुरा में रहते हैं।

प्र: भाई लोग भी इसी काम में लगे हैं ?

ज: नहीं वो लोग रफू का काम करते हैं साड़ी में छेद को भरने का।

प्र: आप कैसे अलग काम में आ गए मतलब साड़ी बनाने के कामों में जैसे डिजाइन बुनाना, कढ़ाना की तरह ही रफू भी इसी से जुड़ा है ?

ज: हाँ, वही सब है।

प्र: पिता का अपना करघा था, मतलब जब साथ रहते थे तब वो मजूरी करते थे ?

ज: नहीं, वो ये सब काम ही नहीं किए वो रफू का काम करते थे।

प्र: तो आप बुनकारी में कैसे आए ?

ज: पच्चीस साल पहले माँ को तलाक दे दिये थे इसलिए हम लोग ननिहाल में पले तो वहाँ ये काम होता था हमलोग बड़े होकर सीखें और वही करने लगे। हो गया आपका ?

प्र: नहीं और बहुत कुछ पूछना था ?

ज: (कई आवाज एक साथ) और पूछना है तो बाहर जाओ भाई बाहर और बहुत से लोग हैं उनसे पूछो।

प्र: अच्छा।